चित्र 1: थनों में सूजन

चित्र 2: सी॰ एम॰ टी॰ से रोग की जांच

चित्र 3: थनों को जीवाणुनाशक घोल में डुबोना

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

केन्द्रीय प्रयोगशाला

लाला लाजपत राय

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय हिसार ।

Ph: 01662-256105

गर्मियों में समयः	*7:00 से 1:30 बजे तक।*
सर्दियों में समयः	*9:00 से 4:30 बजे तक।*

पशुओं में थनैला रोगः
कैसे करें पहचान ?

डॉ. राजेश छाबड़ा[1], डॉ. महावीर सिंह[1]
डॉ. देवेन्द्र सिंह[2]

[1]केन्द्रीय प्रयोगशाला, [2]विस्तार शिक्षा निदेशालय

लाला लाजपत राय

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

हिसार–125004

पहले जाने क्या है थनैला रोग ?

थनैला रोग में जीवाणु थनों में प्रवेश करके दूध बनाने वाली कोशिकाओं को नष्ट कर देते हैं जिससे दूध की गुणवत्ता व मात्रा में भारी कमी आ जाती है।

थनैला रोग दो प्रकार का होता हैः

1. लक्षणसहित (लाक्षणिक) दूध में कतरे, छिछड़े, खून या मवाद आती हैं व लेवटी में सूजन (लालिमा) गाँठ (कठोर) हो जाती है (चित्र 1)।
2. लक्षणरहित या छुपारोग (अलाक्षणिक) दूध व लेवटी में कोई लक्षण नहीं दिखाई देते परन्तु दूध की मात्रा में निरंतर कमी होती जाती है। इसका पता सिर्फ प्रयोगशाला में जाँच द्वारा ही चलता है, अतः दूध कम होने पर थनैला की जाँच अवश्य करवाएँ।

जाने कैसे यह रोग दूसरे पशुओं में फैलता है ?

यह रोग पशु का दूध निकालते समय उचित साफ–सफाई न रखने से, थनैला रोग से ग्रसित पशु से दूध निकालने के बाद स्वस्थ पशु का दूध निकालने से (संक्रमित हाथों से), दूध निकालने के तुरन्त बाद पशुओं को बैठा देने आदि से यह रोग एक पशु से दूसरे पशु में फैलता है।

थनैला रोग की पहचान

इसकी पहचान के लिए किसान भाई प्रतिदिन दूध निकलने के बाद थनों को दोनों हाथों की हथेलियों से दबाकर जाँचें कि किसी थन या लेवटी में कड़ापन या गाँठ तो नहीं बन गई है। किसान भाई दूध निकालने से पहले दूध की पहली धार किसी काले कपड़े या काले कागज पर डालकर देखें इससे दूध में कतरे या रंग में बदलाव का पता लग जाएगा।

घर बैठे कैसे जाँचे थनैला रोग ?

1 3 ग्राम डिटर्जेंट पाउडर या S.D.S. (सोडियम लोरल सल्फेट) को 100 मि0ली0 पानी में घोल लें।

2 अब 5 मि0ली0 ऊपर बनाए गए घोल में 5 मि0ली0 ही दूध मिलाएं।

3 यदि यह मिश्रण हिलाने पर गाढ़ा जेली जैसा (चित्र 2) हो जाता है तो पशु थनैला रोग से ग्रसित है।

4 इस स्थिति में थनैला रोग के कारण एवं उपचार के लिये प्रयोगशाला में दूध के नमूने की जाँच करवाएँ।

दूध के नमूने लेने की विधि

1. साफ जीवाणु रहित शीशी या प्लास्टिक की 2 या 5 मि.ली. की नई सीरिंज दवाई की दुकान से प्राप्त करें।
2. थनों या लेवटी को अच्छी तरह से धो लें और सूखा करें।
3. पहले, दूध की 1–4 धार अलग निकाल लें व अगली धार (करीब 5 मि0ली0) नई सीरिंज में पीछे का हिस्सा (पलंजर) निकालकर हर थन का दूध अलग–अलग सीरिंज में लें व उस पर थन की पहचान लिखें।
4. यह नमूना जल्दी से जल्दी प्रयोगशाला में जाँच के लिए पहुँचाएं।
5. गर्मियों में दूध के नमूने को भेजने के लिए बर्फयुक्त थर्मस का प्रयोग करें। परीक्षण के परिणाम मिलने पर पशु चिकित्सक की सलाह से सही ईलाज शुरु करें।

क्या दूध की प्रयोगशाला में जाँच बिना कराए उपचार करना उचित है ?

नहीं – क्योंकि यह रोग कई प्रकार के जीवाणुओं से होता है और इनके उपचार के लिए अलग–अलग दवाइयाँ काम आती है। आजकल कई दवाइयाँ जीवाणुओं पर कोई असर नहीं दिखाती जिसका प्रयोगशाला में पता लगाया जा सकता है। इसलिए बिना जाँच उपचार करवाना सही नहीं है।

थनैला रोग की रोकथाम कैसे करें ?

- बीमार पशुओं की तुरन्त पहचान करें और दूध को जाँच के लिए प्रयोगशाला में लेकर आएँ।
- खराब दूध को ज़मीन पर न निकालें।
- थनों की चोट का भी समुचित ईलाज करवाएँ।
- पशुओं के रहने का स्थान साफ, हवादार और पर्याप्त प्रकाशयुक्त हो।
- पशुशाला में भीड़ न हो।
- दूध निकालने के बाद सभी थनों को दवा के जीवाणुनाशक घोल (क्लोरहेक्सीडीन, सोडियम हाइपोक्लोराइट) में डुबोएँ। (चित्र 3)
- ब्याने के बाद होने वाले थनैला रोग से बचाव के लिए चिकित्सय परार्मश से शुष्क काल पशु उपचार विधि अपनाएँ।
- जो पशु बार–बार ईलाज कराने पर भी ठीक न हो उसे निकाल दें।